

वर्ष के चार नवरात्रों में चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन के होते हैं, परंतु प्रसिद्धि में चैत्र और आश्विन के नवरात्र ही मुख्य माने जाते हैं। नवरात्र में देवी माँ के व्रत रखे जाते हैं। स्थान-स्थान पर देवी माँ की मूर्तियाँ बनाकर उनकी विशेष पूजा की जाती है। मान्यता है कि नवरात्र में महाशक्ति की पूजा कर श्रीराम ने अपनी खोई हुई शक्ति पाई, इसलिए इस समय आदिशक्ति की आराधना पर विशेष बल दिया गया है।

ऊर्जा का उत्सव नवरात्री



नवरात्रि एक हिंदू पर्व है। नवरात्रि संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है नौ रातें। यह पर्व साल में चार बार आता है। चैत्र, आषाढ़, अश्विन, पोषप्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ रातों में तीन देवियों – महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वतीया सरस्वतीकि तथा दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा होती है जिन्हे नवदुर्गा कहते हैं। नौ देवियाँ है – श्री शैलपुत्री, श्री ब्रह्मचारिणी, श्री चंद्रघंटा, श्री कुष्मांडा, श्री स्कंदमाता, श्री कात्यायनी, श्री कालरात्रि, श्री महागौरी, श्री सिद्धिदात्री। शक्ति की उपासना का पर्व शारदेय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है। सर्वप्रथम श्रीरामचंद्रजी ने इस शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ समुद्र तट पर किया था और उसके बाद दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान किया और विजय प्राप्त की। तब से असत्य, अधर्म पर सत्य, धर्म की जीत का पर्व दशहरा मनाया जाने लगा। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशः अलग-अलग पूजा की जाती है। माँ दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियाँ देने वाली हैं। इनका वाहन सिंह है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती हैं। नवरात्रि के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है। नवदुर्गा और दस महाविधाओं में काली ही प्रथम प्रमुख हैं। भगवान शिव की शक्तियों में उग्र और सौम्य, दो रूपों में अनेक रूप धारण करने वाली दस महाविधाएँ अनंत सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ हैं। दसवें स्थान पर कमला वैष्णवी शक्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्तियों की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी हैं। देवता, मानव, दानव सभी इनकी कृपा के बिना पंगु हैं, इसलिए आगम-निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है। सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, गंधर्व इनकी कृपा-प्रसाद के लिए लालायित रहते हैं।

प्रमुख कथा

लंका-युद्ध में ब्रह्माजी ने श्रीराम से रावण वध के लिए चंडी देवी का पूजन कर देवी को प्रसन्न करने को कहा और बताए अनुसार चंडी पूजन और हवन हेतु दुर्लभ एक सौ आठ नीलकमल की व्यवस्था की गई। वहीं दूसरी ओर रावण ने भी अमरता के लोभ में विजय कामना से चंडी पाठ प्रारंभ किया। यह बात इंद्र देव ने पवन देव के माध्यम से श्रीराम के

नौ दिन कैसे करें कन्या-पूजन

नवरात्रि यानी सौन्दर्य के मुखरित होने का पर्व। नवरात्रि यानी उमंग से खिल-खिल जाने का पर्व। कहते हैं, नौ दिनों तक दैवीय शक्ति मनुष्य लोक के भ्रमण के लिए आती है। इन दिनों की गई उपासना-आराधना से देवी भक्तों पर प्रसन्न होती है। लेकिन पुराणों में वर्णित है कि मात्र श्लोक-मंत्र-उपावास और हवन से देवी को प्रसन्न नहीं किया जा सकता। इन दिनों 2 से लेकर 5 वर्ष तक की नन्ही कन्याओं के पूजन का विशेष महत्व है। नौ दिनों तक इन नन्ही कन्याओं को सुंदर गिण्टस देकर इनका दिल जीता जा सकता है। इनके माध्यम से नवदुर्गा को भी प्रसन्न किया जा सकता है। पुराणों की दृष्टि से नौ दिनों तक कन्याओं को एक विशेष प्रकार की भेंट देना शुभ होता है।

– प्रथम दिन इन्हें फूल की भेंट देना शुभ होता है। साथ में कोई एक श्रृंगार सामग्री अवश्य दें। अगर आप मां सरस्वती को प्रसन्न करना चाहते है तो श्वेत फूल अर्पित करें। अ ग र अ। प के

दिल में कोई भौतिक कामना है तो लाल पुष्प देकर इन्हें खुश करें। (उदाहरण के लिए - गुलाब, चंपा, मोगरा, गेंदा, गुड़हल)

– दूसरे दिन फल देकर इनका पूजन करें। यह फल भी सांसारिक कामना के लिए लाल अथवा पीला और वैराग्य की प्राप्ति के लिए केला या श्रीफल हो सकता है। याद रखें कि फल खट्टे ना हो।

– तीसरे दिन मिठाई का महत्व होता है। इस दिन अगर हाथ की बनी खीर, हलवा या केशरिया चावल बना कर खिलाए जाएं तो देवी प्रसन्न होती है।

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

संक्षिप्त

समाचार

प्रथम दिन

मां शैलपुत्री



मां शैलपुत्री को पर्वतराज हिमालय की पुत्री और मां दुर्गा का प्रथम स्वरूप माना जाता है। इनके दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल सुशोभित है। वे वृषभ पर सवार रहती हैं। इनकी पूजा से जीवन में स्थिरता, शक्ति, साहस और सकारात्मकता प्राप्त होने की मान्यता है।

फ्लाईदुबई कॉकपिट

अटैक की जांच करेगी

एनआईए

एंटी हाइजैकिंग एक्ट में

एफआईआर दर्ज की, जल्द जांच

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेशनल इन्वैस्टिगेटिंग एजेंसी ने फ्लाईदुबई फ्लाइट में पायलट पर हुए हमले को लेकर एफआईआर दर्ज की है। एफआईआर एंटी-हाइजैकिंग एक्ट, 2016 की धारा 3 और बीएनएस की धाराओं के तहत दर्ज हुई है। इन धाराओं के जरिए संभावित लोन-युक्त आतंकी मंशा, साजिश और कटटरपंथी नेटवर्क की जांच होगी। एनआईए हमले के पीछे बड़ी साजिश की जांच करेगी। इस फ्लाइट के दौरान भारतीय कैप्टन रिमंत मच्छर पर हमला हुआ था। दुबई से तेल अवीव जा रहे विमान में ओमानी पायलट ने कैप्टन पर अटैक किया और विमान को गिराने की कोशिश की। जांच में यह भी देखा जाएगा



कि क्या हमले का संबंध भारत पर संभावित हमले से था। एजेंसी यह भी पता लगाएगी कि पूरी साजिश कैसे तैयार की गई। न्यूज एजेंसी के मुताबिक एनआईए विमान को हाईजैक करने की कोशिश के पीछे की बड़ी साजिश की जांच करना चाहती है। दुबई में इलाज करवा रहे हैं कैप्टन रिमंत - भारतीय पायलट रिमंत मच्छर फिलहाल दुबई में हैं। बुधवार को फ्लाईदुबई की दुबई से तेल अवीव जा रही उड़ान में उनके सह-पायलट ने कॉकपिट के अंदर उन पर चाकू से हमला किया। गंभीर चोटों के बावजूद रिमंत मच्छर ने कॉकपिट का दरवाजा खोल दिया। इसके बाद यात्रियों और कू मैबर्स ने हस्तक्षेप किया। इससे बड़ी दुर्घटना टल गई।

रुपए की गिरावट

रोकने के लिए ऐक्टिव

हुआ आरबीआई

सरकारी तेल कंपनियों के लिए

खोली स्पेशल डॉलर विंडो खोली

मुंबई (एजेंसी)। डॉलर के मुकाबले लगातार कमजोर होते भारतीय रुपए को संभालने और मनी मार्केट में उतार-चढ़ाव पर लगाम लगाने के लिए आरबीआई ने दो फैसले किए हैं। आरबीआई ने सरकारी तेल कंपनियों की डॉलर की डेली जरूरतों को पूरा करने के लिए एक स्पेशल डॉलर विंडो शुरू की है। इसके अलावा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने फॉरेक्स डेरिवेटिव ट्रेडिंग से जुड़े नियमों में भी सख्ती कर दी है। बाजार



के जानकारों का मानना है कि इन फैसलों से रुपए को तुरंत थोड़ी राहत मिलेगी, लेकिन गिरावट के लंबे ट्रेंड को पूरी तरह पलटना मुश्किल होगा। शुक्रवार, 9 अक्टूबर को डॉलर के मुकाबले रुपया 96.73 के स्तर पर बंद हुआ था, जो मई में दर्ज इसके 96.96 के ऑल-टाइम-लो के काफी करीब है। कैलेंडर ईयर 2026 में अब तक रुपया 7 फीसदी से ज्यादा और चालू वित्त वर्ष में करीब 3.5 फीसदी गिर चुका है। कच्चे तेल की ऊंची कीमतों, मजबूत डॉलर और विदेशी निवेश के सुस्त होने से रुपए पर लगातार दबाव बनाया हुआ है। आरबीआई रुपए को 97 के स्तर से ऊपर जाने से रोकना चाहता है।

सीजेपी के दिल्ली प्रोटेस्ट पर जमकर मचा बवाल

जंतर-मंतर जाने के दौरान ममता-केजरीवाल गिरफ्तार

प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेडिंग तोड़ी,युवक का सिर फटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन के लिए जा रहे पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल और ममता बनर्जी को पुलिस ने हिरासत में लिया। जंतर-मंतर, कर्नाट प्लेस और मिंटो ब्रिज समेत अलग-अलग इलाकों से अब तक 1,000 से ज्यादा प्रदर्शनकारियों को भी कस्टडी में लिया जा चुका है। प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेडिंग भी तोड़ी। पुलिस ने उन्हें खदेड़कर हिरासत में लिया। इस दौरान एक



प्रदर्शनकारी का सिर भी फट गया। इम्तियाज अली मार्ग पर आकाशवाणी भवन के पास प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेड पार कर पुलिस पर पत्थर फेंके, जिससे दो पुलिसकर्मी घायल हो गए। इससे पहले सीजेपी फाउंडर अभिजीत दीपके को मुंबई से दिल्ली पहुंची फ्लाइट के अंदर से ही हिरासत में ले लिया गया। उनके साथ सीजेपी नेता सीरव दास और आशुतोष रांका को भी पुलिस ले गई।

ममता नेगाया- जागो दुर्गा

तुमी जागो...

पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री को पार्टी नेता डोला सैन के साथ हिरासत में लिया गया है। न्यूज एजेंसी आईएनएस के मुताबिक दिल्ली पुलिस ने ममता बनर्जी को तब हिरासत में लिया, जब वह साउथ एवेन्यू बस स्टॉप पर धरना दे रही थीं। इसी दौरान ममता बनर्जी ने विरोध प्रदर्शन के तौर पर महिषासुर मर्दिनी के छंद भी गुनगुनाती सुनी गई हैं। संयोग से शनिवार को ही महालया रहा और रविवार से दुर्गा पूजा।

संकट के समय खुद के हथियार ही आते हैं काम

राजनाथ सिंह बोले-इसलिए हमने ‘आत्मनिर्भरता’ को अपनाया

ध्रुव, रुद्र, प्रचंड से लेकर आकाश एयर डिफेंस तक का जिक्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शनिवार को राजस्थान के एयर फोर्स स्टेशन जोधपुर में मल्टीनेशनल एयर एक्सरसाइज तरंग शक्ति 2026 के कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान राजनाथ ने कहा कि हमारा मकसद सिर्फ उपकरण बनाना नहीं है। हमारा मकसद डिजाइन करना, इन्वोलेशन करना, इंटीग्रेट करना



और डिलीवर करना है। तेजस और बनाने की हमारी बढ़ती फाइटर एयरक्राफ्ट जैसे स्वदेशी क्षमता, जिसमें ध्रुव, रुद्र और प्रचंड आदि शामिल हैं।

पीएम मोदी की जमकर तारीफ

राजनाथ सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत ने कई साल पहले ही यह समझ लिया था कि आने वाला समय राष्ट्रीय सुरक्षा की मजबूती की कई अप्रत्याशित तरीकों से परीक्षा लेगा। हमने आने वाली उथल-पुथल और रुकावटों का पहले ही अंदाजा लगा लिया था और उनसे खुद को सुरक्षित रखने का फैसला किया था। यह विजन हमारी राष्ट्रीय ताकत की नींव है।

भारतीय वायु

सेना अब एक

आधुनिक सेना

राजनाथ सिंह ने कहा कि आजादी के समय सीमित संसाधनों के साथ काम करने वाली भारतीय वायु सेना अब एक आधुनिक और सक्षम सेना बन चुकी है। आज इसके पास एडवॉंस्ड एयरक्राफ्ट, सटीक निशाना लगाने वाले हथियार, अत्याधुनिक सेंसर, इंटीग्रेटेड नेटवर्क और लगातार बेहतर होती स्वदेशी तकनीकें मौजूद हैं। जब भी कोई भारतीय विमान आसमान में उड़ान भरता है, तो वह सिर्फ एक मशीन की उड़ान नहीं होती; वह व्यापक है।

आत्मनिर्भर

भारत की चर्चा

रक्षा मंत्री ने कहा कि मुझे लगता है कि तरंग शक्ति भारत की हवाई ताकत के क्षेत्र में शानदार यात्रा पर विचार करने का एक उपयुक्त अवसर है। हमने आधुनिक शासन-कला की एक कठोर सच्चाई को समझा। संकट के समय, कोई भी देश लंबे समय तक चलने वाले युद्ध तब तक नहीं लड़ सकता जब तक कि वह अपने हथियार और जरूरी तकनीकें खुद बनाने में सक्षम न हो। इसी वजह से हमने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को अपनी राष्ट्रीय नीति के तौर पर अपनाया।

अबकी हाथी पर सवार होकर आएंगी मां जगदंबा

शक्ति उपासना का पर्व शारदीय नवरात्रि आज से

नई दिल्ली (एजेंसी) कल रविवार 11 अक्टूबर से शारदीय नवरात्रि शुरू हो रही है। वैसे तो शास्त्रों में मां दुर्गा का वाहन सिंह बताया गया है, नवरात्रि के संबंध में मान्यता है कि इस उत्सव में देवी मां अलग-अलग वाहनों पर सवार होकर धरती पर आती हैं। इस साल देवी मां हाथी पर सवार होकर आएंगी। उज्जैन के ज्योतिषाचार्य पं. मनीष शर्मा कहते हैं, देवी मां के वाहन के संबंध में देवी भागवत में बताया गया है।

देवी मां के अलग-अलग वाहनों का असर भी अलग-अलग होता है। देवी भागवत में लिखा है कि- शशिसूर्यें गजारूढ़ा शनिभौमे तुरंगमे। गुरो शुक्रे चंदोलायां बुधे नौका प्रकीर्तितता। इस श्लोक का अर्थ यह है कि अगर सोमवार या रविवार को नवरात्रि की प्रथम पूजा यानी कलश स्थापना होती है, तो मां दुर्गा हाथी पर सवार होकर आती हैं। शनिवार या मंगलवार को नवरात्रि

शुरू होने पर माता का वाहन घोड़ा होता है। गुरुवार या शुक्रवार को नवरात्रि शुरू हो, तो माता डोली में बैठकर आती हैं। जब बुधवार से नवरात्रि शुरू होती है, तब माता दुर्गा नाव पर सवार होकर आती हैं। माता दुर्गा जिस वाहन से पृथ्वी पर आती हैं, उसके अनुसार सालभर होने वाली घटनाओं का भी आकलन किया जाता है। देवी भागवत में लिखा है कि- तत्तफलम गजे च जलदा देवी क्षेत्र भंग स्तुरंगमे। नोकायां सर्वसिद्धि स्या छेलायां मरणध्रुवम। इस श्लोक में देवी मां के वाहन के अनुसार अलग-अलग फल बताए गए हैं। देवी मां जब हाथी पर सवार होकर आती हैं, तब इसे बहुत शुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में सुख-समृद्धि बढ़ती है और पानी ज्यादा बरसता है। देवी घोड़े पर सवार होकर आती हैं, तो प्राकृतिक आपदा आने का भय रहता है,पड़ोसी देशों से युद्ध की आशंका बढ़ जाती है। देवी नाव पर सवार होकर आती हैं, तो सभी भक्तों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं।



18 की जगह 3 घंटे में सिलीगुड़ी पहुंचेगी भारतीय सेना

डोकलाम विवाद के बाद 4 सुरक्षा-इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स शुरू, 2029 में होंगे पूरे



गुवाहाटी (एजेंसी)। अगले चार साल में सिलीगुड़ी कॉरिडोर को देश का सबसे सुरक्षित सैन्य रास्ता बनाने की तैयारी है। जून 2017 में हुए डोकलाम विवाद के बाद केंद्र सरकार ने चिकन नेक (सिलीगुड़ी कॉरिडोर) और सिक्किम क्षेत्र में लगभग 4 बड़ी सुरक्षा-इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स शुरू की हैं। अभी कठिन

पहाड़ी रास्तों और सिंगल-लेन नेटवर्क के कारण भारी तोपों (आर्टिलरी) व सैन्य दस्तों को सीमा तक पहुंचाने में 12 से 18 घंटे का समय लगता है। इन प्रोजेक्ट्स के 2029 तक पूरे होने पर यह समय घटकर मात्र 3 घंटे रह जाएगा। इससे भारतीय सेना चीन की किसी भी चुनौती का करारा जवाब दे सकेगी।

जमीन से 20 मीटर नीचे बनेगी 36 किलोमीटर लंबी रेल टनल

इन प्रोजेक्ट्स की खासियत जमीन से 20 मीटर नीचे बनने वाली 36 किलोमीटर लंबी रेल टनल है। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे के ड्रफ्ट के मुताबिक, यह टनल पश्चिम बंगाल के उत्तर दिनाजपुर जिले के तीन माइल हट से सिलीगुड़ी के पास रोंगापानी तक बनाई जाएगी। भारत, नेपाल और बांग्लादेश की सीमाओं के बेहद करीब बनने वाली इस टनल से ट्रेनें गुजरेंगी। इससे दुश्मन के हवाई और ड्रोन हमलों का असर नहीं होगा। युद्ध के दौरान तोपों और जरूरी सामान बिना किसी रुकावट के सेना की अग्रिम चौकियों तक पहुंचाया जा सकेगा।

पांच अंडग्राउंड

कमांड एंड कंट्रोल

सेंटर बनाए जा रहे

नॉर्थ सिक्किम में 19 हजार फीट ऊपर नाथू ला दर्रे के पास चीनी सेना मौजूद है। इसलिए अब सेना सुरक्षा व्यवस्था को अभेद्य किले जैसा बना रही है। ऑपरेशन फोर्ट्रेस सिलीगुड़ी के तहत 534 करोड़ से बन रहे इस 7-लेयर डिफेंस चक्रव्यूह में जमीन में 20-24 मीटर नीचे 5 कमांड सेंटर, 6 सेंसर सेंटर, 12 एयर डिफेंस व गोला-बारूद स्टोरेज, 12 बम शेल्टर्स बनाए जा रहे हैं। तिब्बत सीमा पर चीन द्वारा बसाए जा रहे नए गांवों के जवाब में तैयार किया जा रहा यह भूमिगत इन्फ्रास्ट्रक्चर पूर्वोत्तर भारत को जोड़ने वाले सर्वेदनशील 'चिकन नेक' कॉरिडोर को किसी भी मिसाइल, ड्रोन या हवाई हमले से पूरी तरह सुरक्षित और अभेद्य बनाएगा।

राजधानी को बंधक बनाने की कोशिश हुई नाकाम

जंतर-मंतर प्रोटेस्ट पर बोले सबित पात्रा

राहुल गांधी को बताया नालायक नेता



भीड़तंत्र पर लोकतंत्र की जीत हुई

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉकरोच जनता पार्टी और लेफ्ट के छत्र संगठनों की ओर से जंतर मंतर पर प्रदर्शन पर बीजेपी ने रिएक्ट किया है। बीजेपी प्रवक्ता सबित पात्रा ने कहा कि जंतर-मंतर पर जो हो रहा है, टीवी पर जो दिख रहा है और सोशल मीडिया के कुछ हैंडल पर जंतर-मंतर को दिखाया जा रहा है, वो भारत की कहानी नहीं है। सबित पात्रा ने कहा कि भारत शांत है, भारत सुशासन के साथ आगे बढ़ रहा है मगर दिल्ली के एक कोने में कुछ अराजक तत्व जिस तरह से अराजकता कर रहे हैं, वो भी कुछ दिनों से हम देख रहे हैं।

बीजेपी प्रवक्ता ने कहा कि राहुल चाहेते थे दिल्ली की सड़कों पर लड़ाई हो मगर आज भीड़तंत्र पर लोकतंत्र की जीत हुई है। जिस तरह लोकतंत्र ने आज दिल्ली में प्रदर्शन किया है और जिस तरह से सारा विपक्ष कंट्रोल में है, में यह दोहराना चाहता हूं कि अराजकतावादी रिफल हो गए और उनका यह कार्यक्रम नहीं चलने वाला है। सबित पात्रा ने कहा कि कुछ दिन पहले कांग्रेस पार्टी ने एक बंद बुलाया था। कांग्रेस पार्टी का प्रदर्शन था। आज कुछ दूसरे तत्वों ने प्रदर्शन किया है।

बेटी की शादी नहीं, उसके सपनों, अधिकारों में निवेश कीजिए

(लेखक – सुनील कुमार गुप्ता)

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर विशेष : 11 अक्टूबर)

भोपाल। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस की थीम है, ‘बाल विवाह समाप्त करें और बालिकाओं के अधिकारों में निवेश करें।’ दरअसल भारत और मध्य प्रदेश के हालातों के नजरिए से देखें तो यह आह्वान केवल एक सामाजिक बुराई के विरुद्ध अभियान नहीं, बल्कि परिवार, समाज, सरकारी योजनाओं और संस्थागत जवाबदेही की परीक्षा है।

जरा कल्पना कीजिए उस लड़की की, जिसकी स्कूल की किताबों में अभी कई अध्याय बाकी हैं। जिसने अपनी काँपी के आखिरी पन्ने पर अपने सपनों की इबारत लिख रखी है, उसने इस पन्ने पर डॉक्टर, शिक्षक, पुलिस अधिकारी या अपने मनपसंद किसी पेशे का नाम लिख रखा है। लेकिन एक दिन उसे बताया जाता है कि अब उसकी पढ़ाई से ज्यादा जरूरी उसकी शादी है। घर में मेहमान आने लगते हैं, कपड़े खरीदे जाते हैं और विवाह की तैयारियां शुरू हो जाती हैं। उससे कोई नहीं पूछता है कि वह क्या चाहती है? उसकी उम्र अभी अठारह वर्ष भी नहीं हुई, लेकिन उसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा फैसला उसकी इच्छा पूछे बगैर कर कर लिया गया। यह किसी एक परिवार की कहानी नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था का आईना है, जिसमें लड़की का भविष्य कई बार उसकी इच्छा से नहीं, परिवार की आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, परंपरा और सुरक्षा संबंधी आशंकाओं से तय होता है। दरअसल हर साल 11 अक्टूबर को मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस इसी वास्तविकता की ओर हमारा ध्यान खींचता है। इस वर्ष 2026 की थीम है—‘बाल विवाह समाप्त करें और बालिकाओं के अधिकारों में निवेश करें।’ इस थीम में दो बातें विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। पहली, बाल विवाह को रोकना केवल विवाह की तारीख आगे बढ़ा देना नहीं है। दूसरी, बालिकाओं के अधिकारों में निवेश का अर्थ केवल आर्थिक सहायता देना नहीं, बल्कि उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, गरिमा और अपने भविष्य के फैसले लेने की स्वतंत्रता उपलब्ध कराना है। सवाल है कि जब हम बेटियों को बचाने, पढ़ाने और सशक्त बनाने के लिए इतनी योजनाएं चलाते हैं, तो फिर इतनी लड़कियों का बचपन विवाह की जिम्मेदारियों के नीचे क्यों दब जाता है? यूनिसेफ के 2026 के अनुमान भी यही कहते हैं कि दुनिया भर में अनुमानित रूप से हर पांच में से एक लड़की शादी 18 साल की उम्र से पहले हो जाती है, जो आज जीवित 65 करोड़ महिलाओं और लड़कियां का प्रतिनिधित्व करती है, जिनकी शादी बचपन में हो गई थी। बाल विवाह आज भी लड़कियों के अधिकारों का सबसे व्यापक उल्लंघन है,

संपादकीय

कैंसर इलाज में राहत

सही मायने में इसे एक अमानवीय कृत्य ही कहा जाएगा कि कैंसर जैसे घातक रोग से जुड़ा रहे मरीजों से दवाओं के मन्माने दाम वसूले जाएं। इस जानलेवा रोग से जुड़ा रहे मरीजों को यूं तो उपचार की अन्य मदों में भी काफी खर्च करना पड़ता है, लेकिन दवाओं की अधिक कीमतों पर नियंत्रण लगाया जाना किसी हद तक राहतकारी साबित हो सकता है। अब केंद्र सरकार ने नॉन-शेड्यूल एटी-कैंसर दवाइयों पर ट्रेड मार्जिन को तीस फीसदी तक सीमित करने का फैसला किया है। निस्संदेह, यह कदम उस हेल्थकेयर क्षेत्र में एक स्वागत योग्य पहल है। जहां मरीजों को अधिक पैसा चुकाने को मजबूर होना पड़ता है। दरअसल, कैंसर का त्रास झेल रहे व्यक्ति व उसके परिवार पर इस रोग का उपचार आर्थिक रूप से भारी बोझ डालता है। ऐसे में कैंसर रोग में काम आने वाले दवाइयों की कीमत में कमी लाने का प्रयास समय की जरूरत भी है। सरकार का अनुमान है कि दवाइयों की कीमतों में नये सिरे से नियमन के जरिये मरीजों को हर साल 2,500 करोड़ रुपये तक की बचत होगी। इस बाबत दावा किया जा रहा है कि कुछ दवाइयों की कीमतों में सतर फीसदी तक की कमी आ सकती है। हालांकि, मरीजों को लाभ के आंकड़े अनुमानित हैं और इनकी हकीकत प्रावधानों के लागू होने पर ही स्पष्ट हो पायेगी। वास्तव में सबसे पहले यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि दवायों ज़ा रही राहत वास्तव में मरीजों तक भी पहुंचे। समय रहते अधिकारियों को तुरंत उन दवाओं की जानकारी मरीजों व तित्मारदारों को देनी चाहिए, जिन पर यह कटौती लागू की गई है। साथ ही दर्ज की गई कीमतों में बदलाव को भी स्पष्ट करना चाहिए। इसके अलावा नियमों का पालन सुनिश्चित करने पर नजर रखी जानी चाहिए। दूसरी ओर ज्यादा कीमत वसूलने वालों पर जुर्माना लगाया जाना चाहिए। सरकार को यह भरोसा भी कायम करना होगा कि नई कीमत नियमन के लागू होने के बाद दवा कंपनियों सप्लाई यथावत बनाये रखेंगी। सही मायने में कीमतों में आई असली कमी – मरीजों की बचत और दवाइयों की उपलब्धता की समय-समय पर जानकारी देने से ही सुनिश्चित हो सकेगी। तभी पता चलेगा कि यह कदम वास्तव में कितना कारगर है। दरअसल, सरकार द्वारा कैंसर के मरीजों को राहत देने का यह प्रयास नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइसिंग अथॉरिटी के 2019 के उस फैसले को ही आगे बढ़ाता है, जिसमें 42 नॉन-शेड्यूल कैंसर-रोधी दवाओं को शामिल किया गया था। दावा किया जाता रहा है कि उस पहल के उपरांत दवाइयों के 526 ब्रांड्स में वार्षिक रूप से 984 करोड़ रुपये की बचत मरीजों को हुई थी। अतः पिछला अनुभव बताता है कि ट्रेड मार्जिन को रेगुलेट करने से पूरी मार्केट में एक जैसी कीमतें लागू किए बिना भी मरीजों को वास्तविक लाभ ज़मीनी स्तर पर मिल सकता है। वास्तव में कैंसर के मरीजों को राहत देने के उपायों के क्रम में और अधिक दवाइयों को इस राहत के दायरे में लाना होगा। जिसमें विदेशों से आयातित और पेटेंटेड दवाइयां भी शामिल हैं। तभी कैंसर रोगियों को वास्तव में अधिक राहत मिल सकेगी क्योंकि अभी भी उन्हें बहुत ज्यादा कीमत चुकानी पड़ रही है। वैसे हकीकत में देखा जाए तो दवाइयों के मूल्य की सीमा तय करने के बाद भी कैंसर के महंगे इलाज का कारगर व्यापक समाधान संभव नहीं है। दरअसल, मरीजों के सामने जांच, सर्जरी, रेडिएशन, अस्पतालों में भर्ती होने और इलाज के बाद की देखभाल के लिये भारी-भरकम बिल चुकाने की मजबूरी होती है। राहत के लिये अस्पतालों के जरिये बेची जाने वाली चिकित्सा सामग्री और दवाइयों की ज्यादा कीमतों की भी जांच होनी चाहिए।

(लेखक – डॉ. श्रीगोपाल नारसन)

नवरात्र का पर्व देवी पूजा के विभिन्न रूपो की साधना का अवसर है जिसमे आस्था,लोकसंस्कृति, शिल्प कला और बच्चों में कलात्मक गुणों का समावेश करने की पुरातन परम्परा है।इन्ही से से एक है,नवरात्र पर देवी रूप में सांझी की स्थापना और फिर पूरे नवरात्र सांझी की लोकगीतों के साथ पूजा।स्तुति रूपि इन लोकगीतों में,

लिखी धोड़ी रे कोन फिरे सवार,मै था दुलीचन्द बोबो हे, सांझी का लेवणहार।
बोबो थोड़ा पिला दे हे तेरा ब्या पीरया जाए।
नवरात्रों पर हर घर में यह लोकगीत पुराने समय से गाया जाता है।सांझी की आरती के रूप में सुबह शाम गाये जाने वाले इस लोग गीत में कही न कही एक संदेश है,साथ ही भारतीय संस्कृति की अनूठी झलक भी इस गीत में देखने को मिलती है।
श्राद्ध के अन्तिम दिन अमावस्या को देवी रूप में मिटटी से बनी मां सांझी को प्रतिष्ठित कर मां सांझी की पूरे नवरात्रों तक पूजा अर्चना की जाती है। पहले गांव हो या शहर, घर लड़कियां कच्ची

जो लाखों लड़कियों को स्कूल में पढ़ने, अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने, हिंसा से मुक्त जीवन जीने और अपनी क्षमता को साकार करने के अवसर से वंचित करता है।

बता दें कि वर्ष 2020 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं की शादी की न्यूनतम आयु 18 से बढ़ाकर 21 वर्ष करना का विचार देश के सामने रखा था। उद्देश्य स्पष्ट और न्यायसंगत था कि लड़कियों को शिक्षा, स्वास्थ्य और लैंगिक समानता का पूर्ण अधिकार मिले, लेकिन छह साल बीत जाने के बाद भी यह घोषणा विधायी प्रक्रियाओं और संसदीय समितियों के फेर में उलझकर रह गई है। संसद की 17वीं लोकसभा का कार्यकाल समाप्त होने के साथ ही ‘बाल विवाह निषेध (संशोधन) विधेयक, 2021’ अपने आप खत्म हो गया।

परिणामस्वरूप, देश में आज भी कानूनी धरातल पर वर्ष 2006 का पुराना अधिनियम ही लागू है, जिसमें लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु 18 वर्ष तय है। हालिया राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–6 (ह्रस्व।।स–6) के आंकड़े यह दर्शाते हैं कि देश और विशेष रूप से मध्य प्रदेश में बाल विवाह की दरों में गिरावट तो आई है, लेकिन यह गति बेहद धीमी है। रिपोर्ट के अनुसार देश में 20 से 24 वर्ष की लगभग 20.1।ब महिलाओं का विवाह 18 वर्ष की आयु पूरी होने से पहले ही हो गया। हालांकि यह ह्रस्व।।स–5 के 23.3 के आंकड़े से थोड़ा कम है, फिर भी हर पांचवीं बेटी आज भी बाल विवाह का शिकार बन रही है।

मग्न के हाल, क्या कहता है एनएचएफ–6 का सर्वे : मध्य प्रदेश में बाल विवाह की स्थिति देखें, तो पाते हैं कि राज्य में लगभग 23।ब लड़कियां 18 साल से कम उम्र में व्हाही जा रही हैं। बुंदेलखंड, चंबल और आदिवासी बहुल अंचलों में यह समस्या आज भी सामाजिक ताने-बाने के रूप में गहरी पटी हुई है। विधानसभा में प्रस्तुत हालिया आंकड़ों के अनुसार, मध्य प्रदेश में बाल विवाह रोकने के सरकारी प्रयासों से दर्ज मामलों की संख्या 2020 में 366 से बढ़कर 2025 में 538 तक पहुंची है। आप कह सकते है कि यह वृद्धि बेहतर रिपोर्টিंग और प्रशासनिक सजगता की वजह से हुई, लेकिन यह भी साबित करती है कि ज़मीनी स्तर पर बाल विवाह रोकने की चुनौती कितनी भयावह है।

बाल विवाह के मामले में सबसे खराब स्थिति मग्न के आगर मालवा क्षेत्र की है, जहां 20 से 24 वर्ष की आयु की 49.4 प्रतिशत लड़कियों की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले ही हो गई थी। यानी जिले में हर दूसरी लड़की की शादी उसके वयस्क होने से पहले ही हो जाती है। एनएफएचएस–6 के आंकड़े बयां करते हैं कि आगर मालवा में यह दर

शारदीय नवरात्र : शक्ति, साधना और सामाजिक बदलाव का पर्व

(लेखक- सुनील कुमार महला)

(नवरात्र पर विशेष आलेख)

शारदीय नवरात्र 2026 इस वर्ष 11 अक्टूबर से 19 अक्टूबर 2026 तक मनाए जाएंगे। पाठकों को बताता चूं कि प्रतिपदा यानी पहला नवरात्र 11 अक्टूबर, रविवार, अष्टमी 18 अक्टूबर, रविवार, महानवमी 19 अक्टूबर, सोमवार तथा विजयादशमी (दशहरा) 20 अक्टूबर, मंगलवार को होगी। शारदीय नवरात्र में मों दुर्गा के नौ स्वरूपों की नौ दिनों तक पूजा-अर्चना की जाती है। यह पर्व शक्ति, भक्ति और सकारात्मक ऊर्जा का प्रमुख पर्व माना जाता है।

साल में चार बार आते हैं नवरात्र–

यहां यह भी बताता चूं कि साल में चार बार नवरात्र आते हैं–दो मुख्य और दो गुप्त। सबसे पहले चैत्र नवरात्र आते हैं, जो मार्च या अप्रैल में पड़ते हैं। इसी समय हिंदू नववर्ष का भी शुभारंभ माना जाता है। इसके बाद शारदीय नवरात्र आते हैं, जो सितंबर या अक्टूबर में पड़ते हैं। इन्हें सबसे प्रमुख नवरात्र माना जाता है और इनके समापन के बाद दशहरा मनाया जाता है। इनके अलावा दो गुप्त नवरात्र होते हैं—एक माघ मास में जनवरी-फरवरी के आसपास और दूसरा आषाढ़ मास में जून-जुलाई के आसपास। गुप्त नवरात्र विशेष पूजा, मंत्र-जाप और साधना करने वालों के लिए विशेष महत्व रखते हैं।

आत्मशुद्धि से सामाजिक बदलाव तक–

शारदीय नवरात्र केवल देवी-पूजा और उपावास का पर्व नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, नारी सम्मान, संयम और सामाजिक जागरण का अवसर भी है। नौ दिनों तक मों दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों की आराधना हमें यह स्मरण कराती है कि जीवन में शक्ति का अर्थ केवल सामर्थ्य नहीं, बल्कि सत्य, करुणा, धैर्य और सदाचार भी है। नवरात्र मनुष्य को अपने भीतर की बुराइयों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।आध्यात्मिक दृष्टि से यह पर्व असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म और काम, क्रोध, लोभ तथा अहंकार जैसी आंतरिक बुराइयों पर विजय का संदेश देता है। नौ दिनों

एनएचएफ–5 के 35.6 के मुकाबले बढ़कर 49 फीसदी हो गई है। यानी पांच वर्षों में इसमें 13.8 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। हालांकि नए हेल्थ सर्वे–6 में, राज्य की समग्र स्थिति में कुछ सुधार दिखाई दे रहा है। एनएफएचएस–5 में, मध्य प्रदेश में 20–24 आयु वर्ग की 23.1 प्रतिशत लड़कियों की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले हो गई थी, जबकि एनएफएचएस–6 में यह अनुपात घटकर 20 प्रतिशत हो गया। मतलब राज्य स्तर पर 3.1 प्रतिशत अंकों की कमी आई है। इस संदर्भ में, राज्य में हर पांच महिलाओं में से एक ऐसी है जिसकी शादी 18 वर्ष की आयु से पहले हो गई थी।

मध्य प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर भी सामने आया है। एनएफएचएस–6 के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में 9 प्रतिशत महिलाओं की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले हो गई थी, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह अनुपात 23.4 प्रतिशत था। इसका मतलब है कि शहरों की तुलना में गांवों में यह समस्या ढाई गुना से भी अधिक गंभीर है। हरदा में, एनएफएचएस–5 के दौरान, 20–24 आयु वर्ग की 10 प्रतिशत महिलाओं की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले हो गई थी। एनएफएचएस–6 में, यह अनुपात बढ़कर 20.8 प्रतिशत हो गया। यानी, पांच वर्षों में 10.8 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई और अनुपात दोगुने से भी अधिक हो गया। खंडवा में, एनएफएचएस–5 में 18 वर्ष से कम आयु में विवाह का अनुपात 10.8 प्रतिशत था। एनएफएचएस–6 में यह बढ़कर 16.9 प्रतिशत हो गया। यानी जिले में 6.1 प्रतिशत अंकों की वृद्धि दर्ज की गई। सतना में भी एनएफएचएस–6 में भी यह आंकड़ा बढ़कर 5 प्रतिशत बढ़कर 16.2 प्रतिशत हो गया, यानी 5 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई। सबसे खराब हालात तो गांवों में हैं, जहां बाल विवाह की दर ढाई गुना से भी अधिक है, जो हालात के बेहद गंभीर होने का इशारा करती है।

ऐसे में आप देखें तो पाते कि यदि शादी की कानूनी उम्र 18 से बढ़ाकर 21 कर भी दी जाए, तो भी जब तक समाज की मानसिकता और आर्थिक स्थितियां नहीं बदलेंगी, तब तक इसका असर जमीनी स्तर पर दिखाई नहीं देगा। उदाहरण के तौर पर, मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में अक्षय तृतीया या देवउत्तरी एकादशी जैसे सामूहिक विवाह के अवसरों पर आज भी चोरी-छिपे बाल विवाह की खबरें आती हैं।

परिवारों के लिए बाल विवाह केवल परंपरा नहीं, बल्कि एक वजह बेटी को आर्थिक बोझ समझना भी है। बेटी को पराया धन मानकर उसके लालन-पालन और सुरक्षा के खर्च से जल्द से जल्द मुक्ति पाने की सोच है। दूसरी सोच है सामाजिक अचुरक्षा और लड़कियों के साथ होने अपराधों के डर के चलते परिवारों का यह मानना कि शादी कर देने से

के व्रत, साधना और संयम से मानसिक शुद्धि तथा आत्म-नियंत्रण का विकास होता है और मानव चेतना आध्यात्मिक उन्नति की ओर बढ़ती है। सरल शब्दों में कहें तो नवरात्र अंधकार से प्रकाश, असत्य से सत्य और नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। उपावास और साधना का उद्देश्य केवल खान-पान पर नियंत्रण रखना नहीं, बल्कि मन और विचारों पर नियंत्रण स्थापित करना भी है। क्रोध, अहंकार, लोभ, ईर्ष्या और द्वेष जैसी कमजोरियों को त्यागकर धैर्य, प्रेम और विवेक को विकसित करना ही नवरात्र की वास्तविक साधना है। देवी के नौ स्वरूप जीवन के अलग-अलग गुणों और शक्तियों के प्रतीक माने जाते हैं।

नारी सम्मान और सामाजिक समरसता का संदेश–

सामाजिक स्तर पर नवरात्र नारी शक्ति, नारी सम्मान और महिला सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण प्रतीक है। सामूहिक पूजा, गरबा और पंजलों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्ग बिना किसी भेदभाव के एक साथ आते हैं। इससे भाईचारे और सामाजिक समरसता को मजबूती मिलती है। कन्या पूजन और दान-पुण्य की परंपराएं समाज के कमजोर वर्गों के प्रति करुणा और सेवा भाव जगाती हैं। देही देवी के नौ स्वरूप हमें प्रकृति के संरक्षण का संदेश भी देते हैं। बहरहाल यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि नवरात्र का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश नारी सम्मान और नारी शक्ति से जुड़ा है। जिस समाज में स्त्री को शक्ति का स्वरूप मानकर उसकी पूजा की जाती है, वहां उसके सम्मान, सुरक्षा, शिक्षा और समान अधिकार को भी व्यवहार में स्थान मिलना चाहिए। कन्या पूजन की सार्थकता तभी है, जब बेटियों को जन्म से लेकर शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने तक समान अवसर प्राप्त हों। देवी की पूजा के साथ बेटियों का सम्मान ही नवरात्र की सच्ची भावना है।पाठक जानते हैं कि आज हमारा समाज हिंसा, नशे,



तनाव, भेदभाव, पर्यावरण संकट और सामाजिक असंवेदनशीलता जैसी अनेक चुनौतियों से जुझ रहा है।ऐसे समय में नवरात्र हमें केवल पूजा-पाठ तक सीमित रहने के बजाय अपने भीतर और अपने आसपास सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा देता है। इस अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम किसी कमजोर का सहारा बनेंगे, महिलाओं और बच्चों का सम्मान करेंगे, प्रकृति की रक्षा करेंगे तथा समाज में प्रेम, भाईचारा और सद्भाव को बढ़ावा देंगे।

अंत में यही कहूंगा कि नवरात्र का संदेश केवल नौ दिनों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। मों दुर्गा की आराधना तभी सार्थक है, जब उनके साहस को अपने कर्मों में, करुणा को अपने व्यवहार में और शक्ति को समाज के कल्याण में उतारा जाए। यही नवरात्र की वास्तविक आध्यात्मिक साधना और सामाजिक सार्थकता है।

(सुनील कुमार महला, फीलास राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार)

सुखी रहने के लिए लें धर्म की शरण!

दुनिया का हर व्यक्ति केवल सुख ही चाहता है। दुःख से सब दूर भागते हैं। यदि हमें सुखी रहना है तो सबसे पहले धर्म से जुड़ना होगा। किसी के मन को दुखाना भी पाप है। भागदौड़ भरी जिंदगी में आज हर व्यक्ति विवेक नहीं रख पाता है। इसलिए पाप बंध को बांधता चला जाता है और पाप बंधने के कारण सुखी नहीं हो पाता। इसलिए सुखी रहने के लिए धर्म की शरण में जाकर धर्म के मर्म को समझना होगा। धर्म की शुरुआत व्यक्ति को सबसे पहले अपने घर से ही करना चाहिए। यदि हम विवेकपूर्ण जीवन जिएंगे तो पाप से बच पाएंगे और जो पाप से बच पाएगा, वहीं सही मायनों में धर्म से भी जुड़ पाएगा। मर्यादाओं को भंग करना पाप की श्रेणी में आता है। इसी तरह किसी के मन को दुखाना भी पाप है। हमें अपने जीवन काल में सुख प्राप्ति के लिए जिनवाणी को आचरण में उतारना होगा, वयोंकि जिनवाणी अमृत रूप है। हमारा सौभाग्य है कि हमें जिनवाणी श्रवण का सुअवसर मिला है। जीवन में यदि सुख प्राप्त करना है तो जिनवाणी को आचरण में उतारना होगा।

धर्म आधारित जीवन जीते हुए ही मनुष्य वैराग्य की ओर अग्रसर हो सकता है। संपूर्ण

जीवन लोभ, मोह, मद, मान और माया में ही व्यतीत हो जाता है और प्रभु आराधना का समय ही नहीं मिल पाता तथा व्यक्ति संसार से प्रस्थान भी कर जाता है। संसार में रहते हुए वैराग्य के प्रसंग जीवन में आते हैं। फिर भी विरक्ति नहीं होती। इसलिए निरंतर साधना व स्वाध्याय करते रहना चाहिए। सुखी और सफल जीवन के लिए भौतिक सुख नहीं, आध्यात्मिक सुख ज्यादा जरूरी है, जो वैराग्य से ही प्राप्त हो सकता है।

संसार के सभी जीव सुख चाहते हैं। सभी लोग सुख प्राप्त करने के लिए ही पुरुषार्थ करते हैं, लेकिन सच्चा सुख कहां है, इसका हमें ध्यान नहीं है। जो जीवात्मा अरिहंत परमात्मा की वाणी को आत्मसात करती है, उसकी सभी प्रकार की आधि-व्याधि नष्ट हो जाती है। जिसने आत्मस्वरूप की पहचान कर ली है, वही धर्मध्यान में लीन होगा। हमारे आर्तध्यान और रौद्रध्यान से जीवन प्रकट जाता है। धर्मध्यान को अपनाकर व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में भी समभाव को धारण कर सकता है। आज धर्मध्यान की जगह धन का ध्यान ज्यादा किया जा रहा है। पैसा साधन जरूर है, पर वह साध्य नहीं है। विडंबना यह है कि आज व्यक्ति धन को ही साध्य मानने की भूल कर रहा है।

नवरात्र पर घर घर मे होती है साड़ी पूजा !

(लेखक – डॉ. श्रीगोपाल नारसन)

मिटटी से नई नई डिजाइन व नये नये साज श्रंगार के साथ सांझी तैयार करती थी। सांझी के साथ चांद तारे से लेकर कई आकृतियां सजाई जाती थी। जो शिल्पकला का अदभुत नमूना होता है।

श्राद्ध पक्ष आते ही सांझी बनाने का सिलसिला शुरू हो जाता है और नवरात्र से एक दिन पहले गोबर से चिपकाकर दिवारों पर सांझी लगाई जाती है।समय के साथ सांझी भी हाईटेक हो गई है। अब सांझी घरों में बनाने के बजाए बाजार से खरीदकर लगाई जाती है।एक सांझी 100 रुपये से 500 रुपये तक आसानी से मिल जाती है। ऐसे में सांझी को घर में बनाने की परम्परा अब खत्म प्रायः हो गई है।जिससे घर की लड़कियां सांझी बनाने की शिल्पकला से वंचित हो गई है। एक बोध कथा के अनुसार, सांझी एक गरीब परिवार में जन्मी एक ऐसी लड़की थी, जिसे ससुराल भी गरीब ही मिली।

ससुराल में सांझी को कई झूठे इल्जाम और ताने सहन करने पड़ते थे। यानि सांझी को ससुराल में प्रताड़ित किया गया। सांझी को मायके लिवाने जब उसका भाई दुलीचन्द

उसकी ससुराल आया तो उससे सांझी की पीड़ा देखी नहीं गई। हद तो तब हो गई जब ससुराल वालों ने सांझी को उसके भाई के साथ भेजने से इंकार कर दिया।सांझी ज़िद पर अड गई और भाई दुलीचन्द के साथ मायके चली गई। जहां पहुंचने पर सांझी की आरती उतारकर पूरे गांव ने स्वागत किया। सांझी के मायके में स्वागत के दौरान चना जिसे चाब कहा जाता है,का प्रसाद बाटा गया । तभी से यह पर्व मनाने और पर्व पर चाब के रूप में भोगे हुए चने बांटने की परम्परा है।

राधा बल्लभ संप्रदाय के अनुयायी सांझी को राधा कृष्ण की प्रेम भक्ति के रूप व्याख्यायित करते है तो कही कही सांझी की पूजा 16 दिनों तक किये जाने की भी परम्परा है। लोक कथाओं के साथ साथ लोक गीतों में कालजयी सांझी की कथा सहज ही समझ में आ जाती है। सांझी की आरती सुबह शाम करते समय प्रार्थना के रूप में जो लोक गीत गाए जाते है उन लोक गीतो की एक बानगी देखिए, चाब दे री चाब दे सांझी की मां चाब दे , तेरी सांझी जीवे चाब दे । इसी तरह आरता री आरता सांझी मां आरता ।

सांझी बनाने के नाम पर उनकी शिल्पकला प्रदर्शित करने का नवरात्र एक अच्छा अवसर है। जिसमें कन्या की पूजा के साथ ही स्त्री शक्ति सम्मान के रूप में मां दुर्गा का भावपूर्ण स्मरण किया जाता है।और श्रद्धालु पूरे नवरात्र उपास रखकर मां सांझी व मां दुर्गा की पूजा अर्चना करते है। साथ ही नन्ही मुन्नी बच्चियों को भोजन कराकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है। है न भारतीय संस्कृति की यह अनूठी परम्परा ,जहां आधी दुनिया यानि स्त्री जाति के सम्मान का एक बड़ा अवसर है। शास्त्रों में भी उल्लेख मिलता है कि जहां नारी का सम्मान होता है वहां ईश्वर वास करते है और जहां ईश्वर वास करते है वह स्थान स्वर्ग बन जाता है।तो आइए इस धरा को भी स्वर्ग बनाए कन्या भूषण हत्या होने न दे,बेटी के जन्म पर फ़क़ करे और उन्हें बेटो के समान पोषण व संरक्षण दे।तभी नवरात्र की सार्थकता है।

(लेखक आध्यात्मिक चिंतक व वरिष्ठ पत्रकार है)
(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार है इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

मैक्सिको की जेल में भीषण दंगा : 10 लोगों की मौत, 16 घायल; इग कार्टेल के गढ़ सिनालोआ में भड़की हिंसा

मैक्सिको की सिटी, एंजेसी। मैक्सिको के कुख्यात और हिंसा प्रभावित राज्य सिनालोआ की एक जेल में गुरुवार को कैदियों के बीच खूनी संघर्ष हो गया। इस भीषण दंगे में कम से कम 10 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि 16 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। सुरक्षा अधिकारियों के अनुसार, मारे गए 10 लोगों में नौ जेल के कैदी थे, जबकि एक व्यक्ति जेल में बंद किसी कैदी से मुलाकात करने आया हुआ परिजन/मुलाकाती था। नेशनल गार्ड ने संभाला मोर्चा हिंसा और झड़प की सूचना मिलते ही सुरक्षा बलों और नेशनल गार्ड की टुकड़ियों को तुरंत जेल परिसर में तैनात किया गया। सुरक्षा बलों के कड़े हस्तक्षेप के बाद अब हालात नियंत्रण में बताए जा रहे हैं। हालांकि, जेल प्रशासन और स्थानीय पुलिस की ओर से अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि दंगे की मुख्य जड़ क्या थी और संघर्ष किन गुटों के बीच शुरू हुआ। उल्लेखनीय है कि सिनालोआ राज्य को मैक्सिको के सबसे हिंसक और खतरनाक इलाकों में गिना जाता है। यह इलाका दुनिया के सबसे कुख्यात 'सिनालोआ इग कार्टेल' का मुख्य गढ़ माना जाता है, जहां अक्सर विभिन्न अपराधिक गिरोहों के बीच वर्चस्व की जंग और हिंसक झड़पें देखने को मिलती रहती हैं।

अमेरिकी कांग्रेस में भारतीय पायलट स्मित को सम्मानित किया जाएगा

वाशिंगटन, एंजेसी। भारतीय पायलट कैप्टन स्मित मखार को अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के कांग्रेसनल रिक्तोंई में सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने फ्लाईइंग्स की उड़ान में एक साथी पायलट के कुल्हाड़ी से हमले के बाद 172 यात्रियों और चालक दल को बचाया था।भारतीय-अमेरिकी कांग्रेस सदस्य राजा कृष्णमूर्ति ने गुरुवार को इसकी घोषणा की। शुक्रवार को कांग्रेसनल रिक्तोंई में बयान दर्ज होगा। यह घटना 30 सितंबर को दुर्बई से तेल अवीव जा रही फ्लाईइंग्स उड़ान 1073 में हुई। कृष्णमूर्ति के बयान के अनुसार, विमान 30 सेकंड में करीब 16,000 फीट नीचे आ गया। गंभीर घोटों के बावजूद, कैप्टन मखार ने कॉकपिट का दरवाजा खोला। इससे यात्री और चालक दल हमलावर को काबू कर सके। विमान में सवार दो आरक्षित फ्लाईइंग्स पायलटों ने नियंत्रण संभालकर उसे सऊदी अरब के तबुक में सुरक्षित उतारा। उड़ान में 4 अमेरिकी नागरिक और 27 बच्चों सहित 172 यात्री थे। कृष्णमूर्ति ने कैप्टन की त्वरित सौच और दृढ़ता की प्रशंसा की।

भारत के साथ जल बंटवारा विवाद वार्ता से ही सुलझेगा : बांग्लादेश

ढाका, एंजेसी। बांग्लादेश के विदेश राज्य मंत्री हामायूं कबीर ने कहा है कि भारत के साथ लंबे समय से चले आ रहे जल बंटवारे के मुद्दों को केवल बातचीत और कूटनीति के जरिये ही सुलझाया जा सकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस दिशा में प्रगति तभी संभव है जब दोनों देशों का शीर्ष नेतृत्व सहयोग की मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखाए। कबीर ने इधरस्थितार को यहां एक सेमिनार के दौरान पत्रकारों से बात करते हुए बताया कि साझा नदियां और गंगा जल बंटवारा संधि के भविष्य को लेकर दोनों पक्षों के बीच चर्चा जारी है।

अमेरिका में 2 लाख भारतवंशी वोटर्स के नाम कटे।मिडवर्स्ट चुनाव में ट्रंप को हार का डर; 2024 में 65% ने विपक्ष को वोट दिया था

न्यूयॉर्क, एंजेसी। अमेरिका की वोटर लिस्ट से 2 लाख भारतीय मूल के वोटर्स का नाम कट गया है। इन लोगों के नाम उन 26 राज्यों में काटे गए हैं, जहां ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी की सरकार है। अमेरिका में करीब 2.1 लाख भारतवंशी वोटर्स हैं। 3 नवंबर को मिडवर्स्ट चुनाव होने हैं। इन चुनावों में ट्रंप की पार्टी को हार का डर सता रहा है। इसकी एक वजह भारतीय मूल के वोटर्स का रुझान है, जो हमेशा से उनकी विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर रहा है। 2024 के राष्ट्रपति चुनाव में करीब 65% भारतीय मूल के लोगों ने डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस को वोट दिया था। वोटर लिस्ट की जांच क्यों हो रही अमेरिका में ट्रंप प्रशासन वोटर लिस्ट की जांच कर रहा है, ताकि अयोग्य वोटर्स के नाम हटाए जा सकें। सरकार का कहना है कि इससे चुनाव में गड़बड़ी रोकने और वोटिंग प्रक्रिया को ज्यादा सुरक्षित बनाने में मदद मिलेगी। इसी मकसद से ट्रंप 'सेव अमेरिका एक्ट' का समर्थन कर रहे हैं। फरवरी में अमेरिकी संसद के निचले सदन ने इस बिल को मंजूरी दी थी।

दुर्गा पूजा से पहले बांग्लादेश में हिंदुओं की सुरक्षा पर चिंता, अवामी लीग ने सरकार को घेरा

ढाका, एंजेसी। बांग्लादेश की अवामी लीग ने गुरुवार को देशभर में रह रहे अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता जताई। पार्टी ने सवाल उठाया कि जब एक पूरे हिंदू परिवार की हत्या हो सकती है और डेढ़ महीने बाद भी मामले में स्पष्ट जवाब नहीं मिलते, तो अल्पसंख्यकों की ज़िंदगी की क्या कीमत रह जाती है। पार्टी ने कहा कि ऐसे भय और असुरक्षा के माहौल में लोगों से कहा जा रहा है कि दुर्गा पूजा मनाई जाएगी, जबकि बांग्लादेश के मंदिरों में सजावट तक नहीं हो रही है। अवामी लीग के अनुसार, बच्चों ने ना पकड़े तक नहीं खरीदे हैं। पार्टी ने एक बुजुर्ग महिला के

हवाले से कहा, 'भगवान ही जानते हैं कि आगे क्या होने वाला है।' पार्टी ने कहा कि ऐसे माहौल में उत्पन्न की बात करना लोगों को भरोसा नहीं देता, बल्कि यह शर्म की बात है। अवामी लीग ने अगस्त में रंगपुर शहर में सेवानिवृत्त हिंदू शिक्षक गणपति चक्रवर्ती और उनके पूरे परिवार की हत्या का उल्लेख करते हुए कहा कि पुलिस के अनुसार यह मामला अब तक लगभग सुलझ जाना चाहिए था। पार्टी ने कहा, 'लेकिन अब तक डीएनए जांच की रिपोर्ट नहीं आई है और घटनास्थल से जुटाए गए 35 अलग-अलग साक्ष्यों में से किसी की भी रिपोर्ट नहीं मिली है। वहीं, इलाके के लोग पुलिस की जांच



पर भरोसा नहीं जता रहे हैं। पीड़ित परिवार के रिश्तेदार भी इस बात को नहीं मानते कि केवल दो लोग परिवार के चार सदस्यों की एक-एक करके गला घोटकर हत्या कर सकते थे। अवामी लीग ने सतारूद बीएनपी सरकार और विपक्षी जमात-ए-इस्लामी को निशाने पर लेते हुए जांच की

विश्वासनीयता पर सवाल उठाए। पार्टी ने पूछा कि अगर मामला सुलझ गया है तो लोग अब भी डरे हुए क्यों हैं, और अगर मामला नहीं सुलझा है तो डेढ़ महीने बाद भी प्रयोगशाला की एक भी रिपोर्ट क्यों नहीं आई। पार्टी ने कहा कि जिस घर में हत्याएं हुई थीं वहां अब पुलिस

लोगों की मौत, मंदिरों और घरों पर हमले, सैकड़ों कथित मानवाधिकार उल्लंघन और रंगपुर में हिंदू परिवार के चार सदस्यों की हत्या जैसी घटनाओं ने अल्पसंख्यकों के बीच भय को और बढ़ा दिया है। पार्टी ने कहा, 'प्रधानमंत्री तारिक रहमान की नई सरकार के लिए समानता के वादों की असली परीक्षा यह है कि कमजोर और संवेदनशील नागरिकों के साथ जमीन पर क्या हो रहा है। बांग्लादेश के धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यक 2026 में भी अपनी सुरक्षा को लेकर चिंताओं से ग्रस्त प्रवेश कर चुके हैं। सरकार बदलने से उनकी आशंकाएं खत्म नहीं हुई हैं।

अमेरिकी सांसदों की चेतावनी: 6जी और सैटेलाइट नियमों में चीन से पिछड़ सकता है अमेरिका



कर सकता है। उन्होंने पत्र में लिखा, 'मेजबान होने के कारण चीन को घरेलू मैदान का फायदा मिलेगा और वह स्पेक्ट्रम तथा तकनीकी मानकों को ऐसी दिशा में ले जाने की कोशिश कर सकता है, जिससे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और उससे जुड़ी कंपनियों, जैसे हुआवेई, के हितों को लाभ पहुंचे। दोनों सांसदों का कहना है कि सम्मेलन से काफी पहले अमेरिका को अपने सहयोगी देशों के साथ मिलकर रणनीति और बातचीत की साझा तैयारी करनी होगी। उन्होंने कहा, 'मजबूत अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल और समान सोच वाले सहयोगियों के साथ पहले से किया गया समन्वय, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एजेंडा का सबसे प्रभावी जवाब होगा।'

29 सितंबर को लिखे गए इस पत्र में प्रतिनिधिमंडल प्रमुख की नियुक्ति को तत्काल प्राथमिकता बताया गया

है। गैलेगो और बैंक्स ने 2023 के वर्ल्ड रेडियोकम्युनिकेशन कॉन्फ्रेंस की तैयारियों के दौरान आई समस्याओं को दोहराने के खिलाफ चेतावनी दी। उस समय अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख को आखिरी समय में बदल दिया गया था। सीनेटरों के अनुसार, पूर्व प्रतिनिधिमंडल सदस्यों ने बताया था कि इस बदलाव के कारण अमेरिका का काफी समय बर्बाद हुआ, जो क्षेत्रीय सहयोग और साझेदारियां बनाने में काम आ सकता था। उन्होंने लिखा, 'हम डब्ल्यूआरसी-27 में ऐसी ही परिस्थितियों के साथ प्रवेश करने का जोखिम नहीं उठा सकते। सांसदों ने कहा कि 6जी से जुड़े फैसले खास तौर पर महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि अगली पीढ़ी की वायरलेस तकनीक के मानक अभी विकसित किए जा रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि हुआवेई के समर्थन वाले प्रस्ताव इन मानकों को प्रभावित कर सकते हैं, इससे पहले कि अमेरिका और उसके साझेदार कोई साझा विकल्प तैयार कर पाएं। सीनेटरों ने गैर-भूस्थिर सैटेलाइट नेटवर्क के तेजी से विस्तार का भी जिक्र किया। उनका कहना है कि इससे रेडियो स्पेक्ट्रम के अंतरराष्ट्रीय समन्वय की अहमियत और बढ़ गई है। हालांकि उन्होंने प्रशासन द्वारा अब तक उठाए गए कुछ कदमों की सराहना भी की। नेशनल टेलीकम्युनिकेशंस एंड इंफॉर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन (एनटीआईए) और

फेडरल कम्युनिकेशंस कमीशन पहले ही इंटर-अमेरिकन टेलीकम्युनिकेशन कमीशन (सीआईटीईएल) को अमेरिकी प्रस्ताव सौंप चुके हैं। अमेरिका अपनी बाकी रणनीतिक स्थितियां 30 नवंबर से बोगोटा में शुरू होने वाली सीआईटीईएल की स्थायी परामर्श समिति-II की अगली बैठक में पेश करने की योजना बना रहा है। गैलेगो और बैंक्स ने मांग की कि उस बैठक से पहले प्रतिनिधिमंडल प्रमुख की नियुक्ति कर दी जाए, ताकि दोनों अमेरिका के आधिकारिक रुख को तैयार करने की प्रक्रिया में हिस्सा ले सकें। उन्होंने जानकारी मांगी कि अमेरिका अपने अंतरराष्ट्रीय साझेदारों के साथ मिलकर भरोसेमंद दूरसंचार आपूर्ति श्रृंखलाएं (टेलीकॉम स्पलाई चैन) कैसे विकसित करेंगे। पत्र में खास तौर पर कहा गया है कि ग्लोबल साउथ के देशों के लिए हुआवेई और अन्य चीनी कंपनियों के विकल्प उपलब्ध कराए जाने चाहिए। दोनों सीनेटरों ने 23 अक्टूबर तक लिखित जवाब या ब्रीफिंग और 2027 की जिक्र किया। उनका कहना है कि इससे रेडियो स्पेक्ट्रम के अंतरराष्ट्रीय समन्वय की अहमियत और बढ़ गई है। हालांकि उन्होंने प्रशासन द्वारा अब तक उठाए गए कुछ कदमों की सराहना भी की। नेशनल टेलीकम्युनिकेशंस एंड इंफॉर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन (एनटीआईए) और

पाकिस्तान और सऊदी अरब ने फिर से किया मिलिट्री पैक्ट, यमन के हतियारों का करेंगे मुकाबला

इस्लामाबाद , एंजेसी। यमन के हतियारों का मुकाबला करने के लिए पाकिस्तान, तुर्की और सऊदी अरब ने एक समझौता किया है। समझौता पांच अक्टूबर 2026 को किया गया। इसके तहत वे खाड़ी देश में तेजी से सेना तैनात करने पर सहमत हुए हैं। वैसे इन तीनों देशों के बीच आपसी समझौता पहले ही हो चुका है। सात अगस्त, 2026 को सऊदी अरब, तुर्की और पाकिस्तान के बीच जॉइंट डिफेंस एग्रीमेंट (संयुक्त रक्षा समझौते) पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह क्षेत्रीय और वैश्विक जियोपॉलिटिकल समीकरणों में एक बहुत ही अहम घटना है।पश्चिम और दक्षिण एशिया में एक न्यूक्लियर पावर, एक नाटो सदस्य और तेल से मालामाल खाड़ी देश एक साथ आए हैं, और वह भी नाटो-स्टाइल की इस शर्त के साथ कि समझौते में शामिल किसी भी देश पर हमला सभी पर हमला माना जाएगा। यह सितंबर 2025 में सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच हुए सिक्कीरिटी पैक्ट (सुरक्षा समझौते) का ही एक बढ़ा हुआ और अनोखा रूप है।इसमें पाकिस्तान शामिल है, जो एक न्यूक्लियर पावर है और डेटरेंट (हमले को रोकने की क्षमता) दे सकता है। तुर्की मिलिट्री इन्वियपमेंट और टेक्नोलॉजी दे सकता है, और सऊदी अरब, जिसके पास बहुत पैसा है, इस सिक्कीरिटी आकिंटेक्वर (सुरक्षा ढांचे) को फंड

कर सकता है। आइए पहले यह देखते हैं कि सऊदी और पाकिस्तान के बीच डिफेंस पैक्ट कितना पुराना है। 1951: दोनों देशों के बीच दोस्ती की एक संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसने आपसी सहयोग की नींव रखी। 1967: पाकिस्तान की सेना द्वारा केएसए (सऊदी अरब) की सेना को ट्रेनिंग देने के लिए 'म्यूचुअल कोऑपरेशन प्रोग्राम (1967)' नाम के एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। 'म्यूचुअल कोऑपरेशन प्रोग्राम (1967)' नाम के पुराने समझौते में बदलाव किया गया, जिसमें केएसए की सेना को ट्रेनिंग देने से जुड़ी शर्तों का दायरा बढ़ाया गया। 1979: 1979 में मक्का की घेराबंदी के दौरान पाकिस्तान ने सऊदी स्पेशल फोर्सज की मदद की और घेराबंदी के ठीक बाद पवित्र स्थलों की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए सऊदी अरब में और सैनिक (लगभग 15,000 सैनिक) भेजे। 1979: सऊदी अरब में पाकिस्तानी सेना की टुकड़ी को तैनात करने के लिए एक प्रोटोकॉल समझौते (1979) पर हस्ताक्षर किए गए। केएसए को हथियारों के उत्पादन और स्पलाई के लिए डिफेंस से जुड़े साईंस और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में व्यापक सहयोग के लिए प्रोटोकॉल समझौते (1979) में भी बदलाव किया गया।

अमेरिका ने माइक्रोसॉफ्ट को ग्रीन कार्ड कार्यक्रम से निलंबित किया

वाशिंगटन, एंजेसी। डेमोक्रेटिक सांसद प्रमिला जयपाल ने माइक्रोसॉफ्ट के लिए ग्रीन कार्ड का रस्ता रोकने के ट्रंप प्रशासन के फैसले की आलोचना की है। करते हुए कहा कि यह कानूनी इमिग्रेशन सिस्टम (आप्रवासन तंत्र) पर हमला करने जैसा है। ट्रंप प्रशासन ने गुरुवार को माइक्रोसॉफ्ट, टाटा, इंफोसिस और विप्रो समेत आठ आईटी फर्मों को विदेशी वर्कर के लिए ग्रीन कार्ड अप्लाई करने के कार्यक्रम से सस्पेंड कर दिया। उनका कहना है कि इस कदम ने अमेरिकियों को जॉब मार्केट से बाहर कर दिया है। जयपाल माइक्रोसॉफ्ट के होमटाउन वाशिंगटन स्टेट से हैं। उन्होंने गुरुवार को कहा कि यह टेक बड़ी कंपनी बड़े इमिग्रेशन सुधारों की वकालत करने में अग्रिणी है। जयपाल की बातों को माइक्रोसॉफ्ट के बचाव के तौर पर देखा गया, जिस पर उपराष्ट्रपति जे डी वेंस ने मजाक उड़ाया। उन्होंने



हैरानी जताई कि क्यासमाजवाद का मतलब मेगाकॉर्पोरेशन के लिए कभी न खत्म होने वाला सस्ता मजदूर उपलब्ध कराना है। वेंस ने कहा, समाजवाद का मतलब साफ तौर पर यह पक्का करने के लिए जी-जान से लड़ना है कि मेगाकॉर्पोरेशन को सस्ते लेबर का कभी न खत्म होने वाला प्रवाह मिलता रहे। वेंस ने गुरुवार को निलंबन की घोषणा की और बड़ी टेक कंपनियों और आउटसोर्सिंग कंपनियों पर अमेरिकी वर्कर की कीमत पर बीजा सिस्टम का गलत इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। जयपाल ने कहा कि ट्रंप

प्रशासन लगातार अप्रवासियों के लिए अमेरिका में अपना टैलेंट देने के कानूनी रास्ते छीनने की कोशिश कर रहा है। यह उन हमलों में से एक और है। बता दें कि माइक्रोसॉफ्ट का मुख्यालय वाशिंगटन राज्य के रेडमंड में है। जयपाल ने कहा, 'आप लीगल इमिग्रेशन पर हथौड़ा चलाकर टूटे हुए इमिग्रेशन सिस्टम को ठीक नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि माइक्रोसॉफ्ट बड़े इमिग्रेशन सुधारों की वकालत करने में लौड़ रहा है, जो पुराने इमिग्रेशन सिस्टम को मॉडर्न बनाते हैं और दुनिया भर के इमिग्रेंट्स को यहां काम करने और अपने परिवारों के साथ रहने के लिए ज्यादा कम नहीं, कानूनी रास्ते देते हैं। जयपाल ने कहा कि परमानेंट लेबर सर्टिफिकेशन प्रोग्राम प्रोग्राम से प्रेरित हमला करने के लिए हसन को फांसी देने की मंजूरी दे दी है। उसने जिन 12 लोगों को मारा और 30 घायल हुए। वह एक सैनिक था।

पक्का करने के लिए कदम उठाए गए हैं कि इससे हमारी अर्थव्यवस्था को शुद्ध लाभ हो और अमेरिकी नौकरियों को नुकसान न हो। जयपाल ने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था, हमारे समुदाय और हमारे परिवार कई सेक्टर में अप्रवासियों पर निर्भर हैं, जिसमें टेक सेक्टर भी शामिल है। उन्होंने कहा कि ट्रंप प्रशासन के इस कदम से इस सिर्फ उन वर्कर का एक मजबूत, स्थिर और अलग-अलग तरह का बीर बनाने की कोशिशों को नुकसान पहुंचाते हैं जिनके पास अमेरिका में आने और रहने के लिए कानूनी रास्ते हैं। साथ ही अमेरिकी वर्कर को बेईमान नियोक्ता से भी बचाते हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह से माइक्रोसॉफ्ट या परमानेंट लेबर सर्टिफिकेशन प्रोग्राम को टारगेट करने से कानूनी और पछला कदम है जो इस देश में योगदान देना चाहते हैं। यह एक साफ प्रक्रिया बताता है जिसमें यह

नेपाल में बाढ़ से 1.66 अरब डॉलर का नुकसान, सबसे ज्यादा बुनियादी ढांचा प्रभावित : विश्व बैंक



काठमांडू , एंजेसी। 26 अगस्त को नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ से भौतिक संपत्तियों को करीब 1.66 अरब अमेरिकी डॉलर का सीधा आर्थिक नुकसान हुआ। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस कुल नुकसान का 83 प्रतिशत हिस्सा बुनियादी ढांचे से जुड़ा है। भौतिक नुकसान को लेकर विश्व बैंक का अनुमान नेपाल सरकार की प्रारंभिक 'रैपिड डैमेज एंड नीड्स असेसमेंट' (आरडीएनए) रिपोर्ट के आंकड़ों से काफी मिलता-जुलता है। सरकार ने अपने शुरूआती आकलन में नुकसान करीब 1.81 अरब अमेरिकी डॉलर बताया था। आरडीएनए के अनुसार, भौतिक संपत्तियों के नुकसान के अलावा करीब 883.32 मिलियन डॉलर का अतिरिक्त नुकसान भी हुआ। इस तरह आपदा का कुल प्रभाव लगभग 2.7 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया। इस सप्ताह जारी 'नेपाल डेवलपमेंट अपडेड' में शामिल विश्व बैंक के 'ग्लोबल रैपिड पोस्ट-डिजास्टर डैमेज एस्टिमेशन' (जीआरएडीई) के अनुसार, सबसे ज्यादा नुकसान बुनियादी ढांचे को हुआ। इसके बाद आवासीय भवनों को 185 मिलियन डॉलर (11 प्रतिशत)

और गैर-आवासीय भवनों को 101 मिलियन डॉलर (6 प्रतिशत) का नुकसान हुआ। भोटेकोशी और त्रिशुली नदियों में आई बाढ़ से जलविद्युत परियोजनाओं, सौर ऊर्जा सुविधाओं, बिजली ट्रांसमिशन नेटवर्क और परिवहन व्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचा। ऊर्जा क्षेत्र, खासकर जलविद्युत परियोजनाएं, सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्रों में शामिल रहीं। अगस्त 2026 की बाढ़ से 12 जलविद्युत परियोजनाएं और एक सौर ऊर्जा परियोजना प्रभावित हुईं। इनमें 281.1 मेगावाट की चालू क्षमता और 395.02 मेगावाट की निर्माणधीन क्षमता शामिल थी। रिपोर्ट के अनुसार, ट्रांसमिशन लाइनों और सबस्टेशनों को हुए नुकसान के कारण 149.6 मेगावाट बिजली राष्ट्रीय ग्रिड तक नहीं पहुंच पाई। इस तरह कुल प्रभावित क्षमता लगभग 430.7 मेगावाट रही, जो वित्त वर्ष 2025-26 के अंत तक नेपाल की कुल जलविद्युत और सौर ऊर्जा क्षमता का लगभग 10.6 प्रतिशत है। बाढ़ से 82 किलोमीटर लंबे रसुवा व्यापार गलियारों (ट्रेड कॉरिडोर) के 55 किलोमीटर से अधिक हिस्से को नुकसान हुआ, जबकि करीब 40 किलोमीटर सड़क पूरी तरह तबाह हो गईं।

महाराष्ट्र के ठाणे में शिवसेना नेता की हत्या के आरोपी यूपी के प्रयागराज से दबोचे गए

प्रयागराज (एजेंसी)। महाराष्ट्र के ठाणे में शिवसेना (यूबीटी) नेता और पूर्व विभाग प्रमुख प्रदीप पूर्णकर की गोली मारकर हत्या के मामले में वांछित दो आरोपियों को उत्तर प्रदेश पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) और महाराष्ट्र पुलिस की संयुक्त टीम ने गिरफ्तार कर लिया। दोनों को नैनी के अरेल सेल्फी प्लाईट के पास से पकड़ा गया। आरोपियों की पहचान वाराणसी के चोलापुर क्षेत्र निवासी संतोष कनौजिया और अमित सिंह के रूप में हुई है। वारदात के बाद दोनों महाराष्ट्र से भागकर प्रयागराज आ गए थे। एसटीएफ के मुताबिक, महाराष्ट्र के ठाणे जिले के कापुरबावडी थाने में दर्ज हत्या के मामले में संतोष कनौजिया और अमित सिंह वांछित थे। महाराष्ट्र पुलिस ने दोनों की गिरफ्तारी के लिए उत्तर प्रदेश एसटीएफ से सहयोग मांगा था। इसके बाद एसटीएफ की प्रयागराज इकाई ने आरोपियों की तलाश शुरू की। एसपी शैलेश प्रताप सिंह के पर्यवेक्षण और प्रभारी जय प्रकाश राय के नेतृत्व में गतिट टीम ने महाराष्ट्र पुलिस के साथ शुक्रवार रात करीब 7:30 बजे नैनी स्थित अरेल सेल्फी प्लाईट के पास से दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

इंदौर के थाने में भाजपा कार्यकर्ता से मारपीट का आरोप, थाना प्रभारी सहित सात पुलिसकर्मी निलंबित

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर शहर के एरोड्रम थाने में भाजपा कार्यकर्ता जयदीप दुबे और उनके जीजा पंकज चौबे के साथ मारपीट और घसीटने का मामला आया है। घटना से नाराज विधायक गोलू शुक्ला के 400 से अधिक समर्थकों ने देर रात थाने का घेराव कर प्रदर्शन किया। हंगामे के बाद थाना प्रभारी वेदेद सिंह कुशवाह सहित सात पुलिसकर्मियों को निलंबित किया। जयदीप दुबे के मुताबिक, शुक्रवार शाम करीब साढ़े पांच बजे घर के पास स्कूटी सवार से अचानक ब्रेक लगाने की बात पर विवाद हुआ था। आरोप है कि स्कूटी सवार ने उनके साथ गाली-गलौज और मारपीट की। बीच-बचाव करने आए उनकी पत्नी और बच्चों के साथ भी अभद्रता कर जान से मारने की धमकी दी गई। इसके बाद वह शिकायत दर्ज करने थाने पहुंचे। दुबे का आरोप है कि सीने में दर्द होने की जानकारी देने के बावजूद उनकी शिकायत पर तत्काल कार्रवाई नहीं की गई। रात करीब 11 बजे वह अपने जीजा पंकज चौबे के साथ फिर थाने पहुंचे। इस दौरान पुलिसकर्मियों से विवाद हुआ। दुबे ने थाना प्रभारी और अन्य पुलिसकर्मियों पर लात-धुंसों तथा डंडों से मारपीट करने का आरोप लगाया। उनकी पत्नी रानू दुबे ने भी पुलिसकर्मियों पर अभद्रता करने और धक्का देने का आरोप लगाया। घटना की जानकारी मिलने पर विधायक गोलू शुक्ला के समर्थक थाने पहुंच गए और कार्रवाई की मांग करने लगे। देर रात वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। इसके बाद थाना प्रभारी सहित सात पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया।

राजौरी में हददसा : खाई में गिरा वाहन, एक ही परिवार के 30 लोग सवार, दो की मौत, 21 घायल

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में एक भीषण सड़क हादसे में एक ही परिवार के कम से कम दो लोगों की मौके पर मौत हो गई और 21 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। यात्रियों से भरा एक वाहन सड़क से फिसलकर गहरी खाई में जा गिरा। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, वाहन में एक ही परिवार के लगभग 30 सदस्य सवार थे। यह दर्दनाक हादसा राजौरी जिले के कालाकोट उपमंडल के मोगला-तारयाट क्षेत्र के केरी छब्बर इलाके में हुआ। जानकारी के मुताबिक, सुदरबनी उपमंडल के मार्चाला इलाके से ये सभी अपने एक रिश्तेदार के निधन पर शोक व्यक्त करने के बाद मोगला-तारयाट की ओर लौट रहे थे। इसी दौरान केरी छब्बर इलाके में वाहन चालक कथित तौर पर वाहन से से नियंत्रण खो बैठा, जिसके चलते यह भीषण दुर्घटना हुई। हादसे के तुरंत बाद घटनास्थल पर चीख-पुकार मच गई। दुर्घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय लोग और बचाव दल मौके पर पहुंचे और बचाव अभियान शुरू किया गया। घायलों को खाई से बाहर निकालने और उन्हें चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने के प्रयास जारी हैं। प्रारंभिक रिपोर्टों में दो लोगों की मौके पर मौत और 21 यात्रियों के गंभीर रूप से घायल होने की जानकारी सामने आई है। हालांकि, हताहतों की अंतिम संख्या और घायलों की स्थिति के संबंध में आधिकारिक पुष्टि का इंतजार है। समाचार लिखे जाने तक बचाव अभियान जारी था और हादसे के कारणों की विस्तृत जांच की जा रही थी।

नागौर में पुजारी से मारपीट के विरोध में हाईवे जाम, 60-70 ग्रामीणों पर मामला दर्ज

नागौर(एजेंसी)। राजस्थान के नागौर जिले में एक पुजारी से मारपीट की घटना के विरोध में ग्रामीणों ने राष्ट्रीय राजमार्ग 458 पर जाम लगा दिया। 8 अक्टूबर की रात तपोवन आश्रम घड़वा नाडो के पुजारी के साथ हुई इस घटना के आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर करीब 60 से 70 ग्रामीणों ने दो घंटे तक हाईवे बाधित रखा, जिसके बाद पुलिस ने प्रदर्शनकारियों के खिलाफ मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। बेरासर, उबासी और पिंडिया गांवों के ग्रामीणों ने राष्ट्रीय राजमार्ग 458 को जाम कर दिया, जिससे नागौर से गुजरने वाले वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ा और यातायात लगभग दो घंटे तक ठप रहा।

अगर आंदोलन शांतिपूर्ण था, तो सीजेपी नेताओं को हिरासत में लेने की जरूरत क्यों पड़ी

एनसीपी नेता सुप्रिया सुले ने सरकार की कार्रवाई को कायरतापूर्ण बताया

मुंबई, एजेंसी। एक कार्यक्रम में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की नेता सुप्रिया सुले ने दीपक और सीजेपी के नेताओं को हिरासत में लिए जाने की निंदा की है, उन्होंने कहा कि ये नेता दिल्ली में शांतिपूर्ण आंदोलन में शामिल होने जा रहे थे। सुले ने सरकार की कार्रवाई को कायरतापूर्ण बताया है। उन्होंने सवाल किया कि अगर आंदोलन शांतिपूर्ण था, तो नेताओं को हिरासत में लेने की जरूरत क्यों पड़ी। सुप्रिया सुले ने कहा कि सरकार का तर्क है कि दिल्ली में बड़ी संख्या में लोगों के जुटने से कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ सकती थी, इसी आशंका के चलते धारा 163 लागू की गई और एहतियात के तौर पर हिरासत में लिया गया। सुले ने इस दलील पर सवाल उठाते हुए कहा कि सरकार ने आंदोलनकारियों से बातचीत करने की कोशिश क्यों नहीं की। उन्होंने कहा कि अगर



कोई शांतिपूर्ण मार्च निकाल रहा है, तो उसे हिरासत में लेने की जरूरत क्या है। आखिर वे क्या कर लेते। सुले ने जंतर-मंतर पर हुए पिछले आंदोलन का जिक्र करते हुए कहा कि वहां 24 घंटे युवा मौजूद रहते थे, लेकिन न हिरा हुई और न ही किसी के साथ दुर्व्यवहार

हुआ, उन्होंने कहा कि वहां महिलाएं और लड़कियां भी अपने घर की तरह सुरक्षित महसूस कर रही थीं, उनके मुताबिक, यह देखकर अच्छा लगा कि नई पीढ़ी अपने विचारों को लेकर स्पष्ट है और आंदोलन किसी खास वर्ग तक सीमित नहीं था, बल्कि

एक ज़ेह्श से जुड़ा हुआ था। सरकार की ओर से यह दलील दी जा रही है कि जुलाई में संसद मार्च के दौरान हुई हिंसा और संसद की कार्यवाही बाधित होने जैसी स्थिति दोबारा न बने, इसलिए एहतियाती कदम उठाए गए हैं, लेकिन सुप्रिया सुले ने इस तर्क को खारिज करते हुए कहा कि सरकार का विकल्प था। उन्होंने सवाल किया कि सरकार की ओर से किसने आंदोलनकारियों से संपर्क करने की कोशिश की। क्या किसी ने विपक्ष या सीजेपी के नेतृत्व से बातचीत की। सुले के मुताबिक अगर सरकार ने आंदोलनकारियों से संवाद किया होता, तो मार्च शांतिपूर्ण तरीके से निकाला जा सकता था। उन्होंने आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार को संवाद करना ही नहीं आता। सुले ने यह भी कहा कि उनकी पार्टी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी इस मुद्दे पर सीजेपी के साथ खड़ी है।

स्टारलिक विवाद के बीच अंबानी पर भड़के एलन मस्क बताया पीएम

नई दिल्ली (एजेंसी)। दुनिया के सबसे अमीर शख्स एलन मस्क ने भारत में अपनी सैटेलाइट इंटरनेट सेवा स्टारलिक को मंजूरी न मिलने पर उद्योगपति मुकेश अंबानी पर सीधा निशाना साधा है। मस्क ने अंबानी को भारत का असली बॉस बताया और उन्हें कटाक्ष करते हुए डियर प्राइम मिनिस्टर अंबानी कहकर संबोधित किया। मस्क भारत में स्टारलिक को मंजूरी न मिलने से पहले से ही बौखलाए हुए हैं। मस्क ने कहा, मुझे नहीं पता था कि आप ही भारत के असली बॉस हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि अंबानी भारत के लोगों का एकतरफा शोषण करेंगे, लेकिन स्टारलिक को देश में नहीं आने देंगे। मस्क के अनुसार, भारत के कई इलाकों में इंटरनेट नहीं है, जिससे बहुत सारे छात्र शिक्षा से वंचित रह जाते हैं और छोटे कारोबारी अपने उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में नहीं बेच पाते। उन्होंने दावा किया कि स्टारलिक लाखों लोगों का जीवन बदल सकता है। एक दिन पहले, मस्क ने एक सोशल मीडिया पोस्ट पर टिप्पणी करते हुए पूछा था कि क्या अंबानी ही भारत के असली बॉस हैं। उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि क्या भारत सरकार अब नागरिकों के हितों को नजरअंदाज करके उद्योगपतियों को फायदा पहुंचाने वाली व्यवस्था की रक्षक बन गई है। मस्क ने बताया कि स्टारलिक को 165 देशों में लाइसेंस मिल चुका है, लेकिन भारत में सभी शर्तों का पालन करने के बाद भी उसे मंजूरी नहीं मिली है।



वांगचुक का केंद्र सरकार को अल्टीमेटम, 24 घंटे में नहीं किया रिहा...



नई दिल्ली , एजेंसी। लद्दाख के पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने दिल्ली में हो रहे सीजेपी कोर्टोस्ट के दौरान नेताओं की गिरफ्तारी पर सवाल उठा दिए हैं। उन्होंने भारत को अघोषित आपातकाल की स्थिति में बताकर गिरफ्तार नेताओं को जल्द रिहा करने की मांग की है। पर्यावरण कार्यकर्ता वांगचुक ने साफ कहा है कि अगर इन नेताओं को कल तक रिहा नहीं किया गया, तब वह अनशन या पदयात्रा शुरू करने पर विचार करूंगा। इन नेताओं में अभिजीत दिपके, सौरभ दास और आशुतोष रांका सहित कॉकरोच पार्टी के कई लोग शामिल हैं। वांगचुक ने एक बयान जारी कर अपनी बात रखी। उन्होंने बताया कि शुक्रवार को उन्होंने आज के प्रदर्शन को लेकर एकजुटता और शांति बनाए रखने की अपील की थी। तब उन्होंने सोचा भी नहीं था कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में ऐसी स्थिति

बन जाएगी, इस स्थिति को अघोषित आपातकाल मान रहे हैं। वांगचुक के मुताबिक, उन्हें इसकी खुशी थी कि आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए कई नेता आगे आए हैं। लेकिन अब उन्हें पता चला है कि उन सभी नेताओं को गिरफ्तार किया है। वांगचुक ने इसी बात पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने उम्मीद जाहिर की है कि गिरफ्तार किए गए सभी नेताओं को जल्द रिहा किया जाएगा। वांगचुक ने साफ किया है कि अगर कल तक नेताओं की रिहाई नहीं होती, तब उन्हें अनशन या पदयात्रा शुरू करने पर विचार करना पड़ेगा। यानी वे खुद अनशन या पदयात्रा के जरिए अपना विरोध दर्ज करने पर सोच सकते हैं। अनशन का मतलब खाना छोड़कर विरोध करना है, जबकि पदयात्रा में लोग पैदल चलकर अपनी बात रखते हैं। वांगचुक ने अपने संदेश में शांति और एकजुटता पर जोर दिया है।

‘हिरासत में हूं, लेकिन आंदोलन जारी है, हिरासत में ली गई आइसा अध्यक्ष नेहा बोरा

नई दिल्ली, एजेंसी। नई दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी के जंतर-मंतर पर प्रस्तावित प्रदर्शन से पहले पुलिस ने आइसा की राष्ट्रीय अध्यक्ष नेहा बोरा को हिरासत में ले लिया। इसके अलावा पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिपके, सौरव दास और आशुतोष रांका को अलग-अलग स्थानों से हिरासत में लेकर पुलिस अपने साथ ले गई। प्रदर्शन को देखकर राजधानी में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई है। हिरासत में लेने के बाद नेहा बोरा ने कहा, 'मैं हिरासत में हूं, लेकिन आंदोलन जारी है। उन्होंने प्रदर्शनकारियों से सकदरजंग फ्लाईओवर पहुंचने की अपील की। उन्होंने कहा कि यदि किसी को रोका जाता है, तब वह उसी स्थान पर बैक़र विरोध जारी रखे। आइसा की राष्ट्रीय अध्यक्ष नेहा ने श्री अरविंदो मार्ग और सफ़दरजंग के पास हिरासत में लिए गए लोगों का जिक्र कर कहा कि एक बस में उनके कई साथी मौजूद हैं और उसके आसपास हजारों प्रदर्शनकारी जुटे हैं। उन्होंने लोगों से उसी



जगह पहुंचकर प्रदर्शन शुरू करने की अपील की, जहां से उन्हें हिरासत में लिया गया था।

प्रदर्शन के बीच शनिवार सुबह से दिल्ली में करीब दो हजार लोगों को एहतियातन हिरासत में लेने की जानकारी सामने आई। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल को भी लोदी एस्टेट के बाहर से हिरासत में लिए जाने की बात सामने आई है। वहीं, पूर्व सांसद साकेत गोखले ने दावा किया कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी

और तुणमूल कांग्रेस के पांच अन्य नेताओं को उनके दिल्ली स्थित आवास के बाहर से हिरासत में लिया गया। गोखले के अनुसार, पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल उन्हें एक वाहन में बैठकर अज्ञात स्थान पर ले गए। यह पूरा घटनाक्रम मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ प्रस्तावित प्रदर्शन के दौरान सामने आया।

दूसरी ओर, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रसारी सबित पात्रा ने प्रदर्शनकारियों पर दिल्ली को बाधित करने और हिंसा भड़काने की कोशिश करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि अराजकतावादी नाकाम रहे और इस कार्रवाई को भीड़तंत्र पर लोकतंत्र की जीत बताया। बीजेपी नेता पात्रा ने कांग्रेस और आम आदमी पार्टी पर भी निशाना साधकर आरोप लगाया कि विशेष गहन पुनरीक्षण में कथित गड़बड़ियों के मुद्दे पर दोनों दल आंदोलन का नेतृत्व करने का श्रेय लेने की होड़ में हैं।

किशतवाड़ आतंकी हमला : एनआईए ने दाखिल की चार्जशीट

पाकिस्तान में बैठे आतंकी दे रहे निर्देश

जम्मू, एजेंसी।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने किशतवाड़ के छत्र क्षेत्र में हुए आतंकी हमले की गहन जांच के बाद शुक्रवार को एक विस्तृत आरोपपत्र दाखिल किया है। इस आरोपपत्र में यह बड़ा खुलासा किया गया है कि हमले की पूरी साजिश सीमा पर पाकिस्तान में रची गई थी। जम्मू स्थित हट्टू की विशेष अदालत में दापर किए गए 535 पन्नों के इस दस्तावेज में गिरफ्तार आरोपी मनीर अहमद और सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में मारे गए तीन पाकिस्तानी आतंिकियों को नामजद किया गया है। जांच ने स्पष्ट कर दिया है कि इस आतंकी वारदात की कमान प्रतिबंधित

आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के पाकिस्तानी कमांडर सैफुल्ल के हाथों में थी। यह मामला 22 फरवरी 2026 का है, जब किशतवाड़ जिले के छत्र क्षेत्र के वानी मोहल्ल, पारस कोटे में आतंकियों ने सुरक्षा व्यवस्था को निशाना बनाते हुए हमला किया था। एनआईए ने लगभग पांच महीने की व्यापक और गहन जांच के बाद हमले की साजिश के हर पहलू, आतंकियों की भूमिका और उन्हें स्थानीय स्तर पर मिली मदद के स्रोतों की पड़ताल की। आरोपपत्र के अनुसार, गिरफ्तार आरोपी मनीर अहमद आतंकियों को अपने घर में शरण देने और छिपाने का गंभीर आरोप है,

जिसके खिलाफ गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएफपीए) की विभिन्न धाराओं के तहत आरोप तय किए गए हैं। वहीं, मारे गए पाकिस्तानी आतंकियों पर भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ने और आपराधिक साजिश करने जैसी गंभीर धाराओं के तहत आरोप लगाए गए हैं।जांच एजेंसी ने बताया कि हमले में शामिल तीनों आतंकियों का नेतृत्व पाकिस्तानी नागरिक सैफुल्ल कर रहा था, जो जैश-ए-मोहम्मद का एक सक्रिय कमांडर था। उसे सैफुल्ल कश्मीरी, अतीक नजीर और अतीक उर रहमान जैसे कई उपनामों से भी जाना जाता था और वह जैश से जुड़े कश्मीर टाइगरस (अजैरल ग्रुप) का सदस्य था।

महाराष्ट्र में सूखे का गहरा संकट: किसानों को जल संरक्षण और फसल प्रबंधन पर जोर -- राष्ट्रीय में जारी करना हैं

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में सूखे का संकट लगातार बढ़ता जा रहा है, जिससे महाराष्ट्र के किसान लगातार चिंतित हैं। कमजोर और असमान मॉनसून के कारण राज्य के 358 में से 265 तालुके सूखाग्रस्त घोषित हो चुके हैं। खरीफ फसलों को हुए नुकसान के बाद अब रबी सीजन की चिंता भी सता रही है। इसके बाद किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती उपलब्ध पानी को बचाना और अगली फसल को सूखे की मार से सुरक्षित रखना है। इस गंभीर स्थिति से निपटने के लिए महाराष्ट्र सरकार ने 16 अक्टूबर से करीब 10 प्रतिशत पानी की कटौती करने का निर्देश दिया है। जल

संसाधन विभाग ने बांधों में उपलब्ध पानी की योजना अगस्त 2027 तक के लिए बनाई है, जिसमें आपातकालीन पानी का बफर स्टॉक भी शामिल है। महायुति सरकार ने पानी के इस्तेमाल की प्राथमिकताएं भी तय की हैं। पहले पीने का पानी, फिर पशुओं और चारे के लिए पानी, और अंत में सिंचाई के लिए पानी दिया जाएगा। इसके बाद किसानों को रबी की फसल चुनते समय पानी की कमी को गंभीरता से लेना होगा। किसानों को अपने क्षेत्र की मिट्टी, उपलब्ध नमी और पानी के स्रोत को ध्यान में रखते हुए फसलों का चुनाव करना चाहिए। सूखे की स्थिति में, कम समय और कम पानी में तैयार होने वाली फसलें अधिक उपयुक्त होंगी। साथ ही, खेत की

मिट्टी में मौजूद नमी को बचाने पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। जहाँ सिंचाई की जरूरत हो, वहाँ ड्रिप या माइक्रो-इरिगेशन जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कर पानी की बचत की जा सकती है। फसल नुकसान से प्रभावित किसानों के लिए सरकार ने 265 सूखाग्रस्त तालुकों में आकलन शुरू किया है। 12 अक्टूबर तक पंचनामे पूरे करने का लक्ष्य रखा गया है, ताकि प्रभावित किसानों तक सहायता मिल सके। किसानों को अपने गाँव में होने वाले पंचनामे की जानकारी लेनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी फसल का नुकसान सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज हो। इसके अतिरिक्त, सूखा से प्रभावित किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा

योजना और अन्य सरकारी राहत प्रक्रियाओं की जानकारी अपने तहसील कार्यालय या कृषि विभाग से तुरंत प्राप्त करनी चाहिए। केंद्र सरकार की फसल बीमा योजना में सूखा सहित कई प्राकृतिक जोखिमों के खिलाफ कवरेज उपलब्ध है। महाराष्ट्र राज्य में हरे और सूखे चारे की कमी की रिपोर्ट भी सामने आई है। किसानों को उपलब्ध चारे का भंडारण करना चाहिए और पशुओं के लिए पानी की व्यवस्था पर पहले से ध्यान देना चाहिए, क्योंकि सरकार ने पेयजल के बाद पशुधन और चारे को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए हैं। इन उपायों को अपनाकर किसान इस संकट की घड़ी में खुद को और अपनी आजीविका को सुरक्षित रख सकते हैं।

